

\*ॐ\*

~~~~~

विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम

विषय- हिन्दी

दिनांक-20-01-2021

कैकेयी का अनुताप

॥ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ॥

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

- क्या कर सकती थी, मरी मन्थरा दासी

.....  
है राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे?

शब्दार्थ दासी -सेविका; निज -अपना;पंजर मत -शरीर के अन्दर

स्थितःअधीर -धैर्य न रखने वाला:वात्सल्य -सन्तान से प्रेम का भावः वत्स -पुत्र;

त्रैलोक्य -तीनों लोक (धरती, आकाश, पाताल);

मातृपद -माता का पद;दुहाई-दीनतापूर्ण की गई याचना।

प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी, राम को वनवास भेजने के लिए स्वयं को दोषी ठहराते हुए पश्चाताप कर रही है।

कैकेयी, मन्थरा को निर्दोष बताते हुए कहती हैं कि मन्थरा तो साधारण-सी दासी है। वह भला मेरे मन को कैसे बदल सकती! सच तो। यह है कि स्वयं मेरा मन ही अविश्वासी हो गया था।

अपने मन को अधीर और अभागा मान कैकेयी अपने अन्तर्मन को कहती हैं कि मेरे शरीर में स्थित हे मन! ईर्ष्या-द्वेष से परिपूर्ण वे ज्वलन्त भाव स्वयं तझमें ही जागे थे। तत्पश्चात् वह अगले ही क्षण सभा को सम्बोधित करते हुए प्रश्न पूछती हैं कि क्या, मेरे मन में केवल आग लगाने वाले भाव ही थे? क्या मुझमें और कुछ भी शेष न था? क्या मेरे मन के वात्सल्य भाव अर्थात् पुत्र-स्नेह का कुछ भी मूल्य नहीं? किन्तु हाय आज स्वयं मेरा पुत्र ही मुझसे पराए की तरह व्यवहार करता है। अपने कर्मों पर पछताते हुए कैकेयी आगे कहती हैं कि तीनों लोक अर्थात् धरती, आकाश और पाताल मुझे क्यों न धिक्कारे, मेरे विरुद्ध जिसके मन में जो आए वह क्यों न कहे, किन्तु हे राम! मैं तुमसे दीन स्वर में बस इतनी ही विनती करती हूँ कि मेरा मातृपद अर्थात् भरत को पुत्र कहने का मेरा अधिकार मुझसे न छीना जाए। ।

क्रमशः

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे के अर्थ को लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिकी 'कुसुम'